Syllabus of Themes in Indian History
Class 10+2
Division of Marks Unit wise.

M.M.85

Part-I

1.	The story of the First Cities: Harappan Archaeology	Marks 5
2.	Political and Economic History: How Inscriptions tell a story.	Marks 8
3.	Social Histories : Using the Mahabharata	Marks 3
4.	A History of Buddhism: Sanchi Stupa	Marks 5

Part-II

5.	Agrarian Relations : The Ain-i-Akbari	Marks 4
6.	The Mughal Court : Reconstructing Histories through Chronicles	Marks 8
7.	New Architecture : Hampi	Marks 5
8.	Religious Histories : The Bhakti-Sufi tradition	Marks 5
9.	Medieval Society Through Travellers' Accounts	Marks 4

Part-III

10.	Colonialism and Rural Society : Evidence from Official Reports	Marks 3
11.	Representations of 1857	Marks 8
12.	Colonialism and Indian Towns: Town Plans and Municipal Reports	Marks 5
13.	Mahatma Gandhi through contemporary Eyes	Marks 8
14.	Partition through oral Sources	Marks 4
15.	The Making of the Constitution	Marks 5

Part-IV

16.	Map work on units 1-15	Marks 5

History (इतिहास)
(Hindi and English Versions)

Time allowed : 3 Hours | Maximum Marks : 85

Candidates are required to give their answers in their own words as far as possible.

परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Marks allotted to each question are indicated against it.

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।

विशेष निर्देश :

Special Instructions:-

(i) अपनी उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ के ऊपर बांई ओर दिए गए वृत में प्रश्न–पत्र सीरीज अवश्य लिखिए।

You must write Question Paper Series in the circle at the top left side of the title page of your answer- book.

(ii) प्रश्नों के उत्तर देते समय जो प्रश्न–संख्या प्रश्न–पत्र पर दर्शाई गई है, उत्तर–पुस्तिका पर वही प्रश्न–संख्या लिखना अनिवार्य है।

While answering your questions, you must indicate on your answer-book the same question no. as appears in your Question Paper.

(iii) उत्तर–पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना / पन्ने न छोड़ें।

Do not leave blank page/pages in your answer book.

(iv) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

All questions are compulsory.

(v) प्रश्न संख्या 1 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं।

Question No.1 is MCQ (Multiple Choice Questions)

(vi) 2 अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में दीजिए।

Give answer to 2 marks questions upto 30-40 words.

(vii) 3 अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–80 शब्दों में दीजिए।

Give answer to 3 marks questions upto 60-80 words.

(viii) 4 अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

Give answer to 4 marks questions upto 100 words.

(ix) 5 अंकों वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए।

Give answer to 5 marks questions upto 120 words.

(x) मानचित्र को उत्तर पुस्तिका के साथ धागे से बांधिए।

Map should be securely tied with answer-book.

प्र.1 (i) सिन्धु घाटी की सभ्यता की खोज किसने की? 1

(A) आर.वी.दयाराम साहनी (B) राखाल दास बनर्जी

(C) एन.जी. मजूमदार (D) एस.एस. तलवार

उत्तर : (A) आर.वी. दयाराम साहनी

(ii) अर्थशास्त्र का लेखक कौन था? 1

(A) चन्द्रगुप्त मौर्य (B) कौटिल्य

(C) मेगस्थनीज (D) अशोक

उत्तर : (B) कौटिल्य

(iii) महाभारत किस ने लिखा? 1

(A) कालिदास (B) लॉड गणेश

(C) बेदव्यास (D) लॉड कृष्ण

उत्तर : (C) बेदव्यास

(iv) भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक कौन था? 1

(A) बावर (B) अकबर

(C) हुमाँयू (D) जहाँगीर

उत्तर : (A) बावर

(v) इस्लाम की पवित्र पुस्तक कौन सी है? 1

(A) रामायण (B) कुरान

(C) वाइवल (D) महाभारत

उत्तर : (B) कुरान

(vi) प्रसिद्ध पुस्तक किताब–उल–हिन्द का लेखक कौन था? 1

(A) अल्वेरूनी (B) इब्नवतूता

(C) कार्ल मार्क्स (D) फ्रास्बाँ वर्नियर

उत्तर : (A) अल्वेरूनी

(vii) भारत में मुगल वंश का अन्तिम शासक कौन था? 1

(A) वाजिदअली शाह (B) बहादुरशाह जाफर

(C) शाहमल (D) अहमदुल्लाशाह

उत्तर : (B) बहादुरशाह जाफर

(viii) असहयोग आन्दोलन कब शरू हुआ? 1

(A) 1920 में (B) 1922 में

(C) 1919 में (D) 1918 में

उत्तर : (A) 1920 में

(ix) साइमन कमीशन भारत कब आया? 1

(A) 1929 में (B) 1925 में

(C) 1927 में (D) 1928 में

उत्तर : (D) 1928 में

(x) मुस्लिम लीग की स्थापना कब हुई? 1

(A) 30 दिसंबर 1906 (B) 20 जनवरी 1905

(C) 25 अप्रैल 1904 (D) 9 जून 1907

उत्तर : (A) 30 दिसंबर 1906

प्र.2 हड़प्पा सभ्यता को काँस्य सभ्यता क्यों कहा जाता है? 2

उत्तर : हड़प्पा सभ्यता को कांस्य सभ्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस सभ्यता के लोग बड़े पैमाने पर काँसे का प्रयोग करते थे।

प्र.3 मेगस्थनीज कौन था? उसने कौन सी पुस्तक लिखी? 2

उत्तर : मेगस्थनीज एक यूनानी राजदूत था जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में 302 ई. पू. से 298 ई. पू. तक रहा।

प्र.4 धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्र क्या हैं? 2

उत्तर : धर्मसूत्र एवं धर्मशास्त्र हिन्दुओं के प्राचीन ग्रंथ हैं। इनमें समाज के लिए विस्तृत आचार संहिताएँ दी गई हैं। ब्राह्मणों के लिये इनका पालन करना आवश्यक था। बाकि समाज से भी यह आशा की जाती थी कि वह इसका अनुसरण करे।

प्र.5 जैन धर्म के पहले तथा अन्तिम तीर्थकर कौन थे? 2

उत्तर : जैन धर्म के पहले तीर्थकर ऋषभदेव थे। जैनधर्म के अन्तिम तीर्थकर स्वामी महावीर थे।

प्र.6 आइन–ए–अकबरी के बारे में आप क्या जानते हैं? 2

उत्तर : आइन–ए–अकबरी का रचयिता अबुल फज़्ल था। इसे 1598 ई. में पूर्ण किया गया था। इसका उद्देश्य अकबर के प्रशासन के लिए मार्गदर्शन करना था।

प्र.7 खुद–काश्त कौन थे? 2

उत्तर : खुद–काश्त वे किसान थे जो अपने परिवार की सहायता से अपनी भूमि पर स्वयं खेती करते थे। उनके खेत उसी गाँव में स्थित होते थे, जहाँ वे रहते थे।

प्र.8 जिहाद शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : जिहाद शब्द का अर्थ है धार्मिक युद्ध। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने जब भी भारत पर आक्रमण

किया तो उन्होंने सदैव जिहाद का नारा लगाया। इसका उद्देश्य मुस्लिम सैनिकों में उत्साह भरना था। बाबर ने राणा साँगा के विरूद्ध हुई लड़ाई को जिहाद का नाम दिया था।

प्र.9 चाँद बीबी कौन थी? 2

उत्तर : चांद बीबी बीजापुर की रानी और अहमदनगर के सुल्तान बुरहान–उल–मुल्क की बहन थी।

प्र.10 विजय नगर साम्राज्य की स्थापना कब और किसने की थी? 2

उत्तर : विजय नगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर और बुक्का नामक दो भाईयों ने की थी।

प्र.11 लैप्स के सिद्धाँत से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : लैप्स के सिद्धांत के अधीन जब देशी आश्रित राज्य के शासक की बिना उत्तराधिकारी के मृत्यु हो जाती थी तो उसके राज्य को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया जाता था। ऐसे में उसके गोद लिए पुत्र को उसका उत्तराधिकारी नहीं माना जाता था।

प्र.12 व्हाइट टाउन एवं ब्लैक टाउन से आपका क्या अभिप्राय है? 2

उत्तर : व्हाइट टाउन से अभिप्राय उस शहर से था जहाँ गोरे भाव यूरोपीयन रहते थे। ब्लैक टाउन से अभिप्राय उस शहर से था जहाँ काले भाव भारतीय रहते थे।

प्र.13 करो या मरो का नारा किसने दिया था और क्यों? 2

उत्तर : करो या मरो का नारा महात्मा गाँधी ने दिया था। यह नारा इसलिए दिया गया था ताकि भारतीयों को अंग्रेजी शासन का अन्त करने के लिए प्रेरित किया जा सके।

प्र.14 संविधान से आप क्या समझते हैं? 2

उत्तर : संविधान से अभिप्राय उन नियमों से है जिनके आधार पर सरकार को चलाया जाता है।

प्र.15 लोथल क्यों प्रसिद्ध हैं? 2

उत्तर : यह नगर अपनी बहुत बड़ी बंदरगाह के कारण सुविख्यात था इस बंदरगाह से पश्चिमी एशिया के देशों से बहुत व्यापार चलता था। यहां पर मनके बनाने का उद्योग भी मिला है।

प्र.16 बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन करें। 3

उत्तर : बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध थे। उनका जन्म 567 ई. में लुम्बिनी (नेपाल) में हुआ। उन्होंने बहुत ही सरल व गूढ़े ज्ञान से भरे उपदेश दिए। संक्षेप में उनकी शिक्षाओं का वर्णन निम्नलिखित है:–

(1) **चार महान सत्य व अष्टमार्ग :-** महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं के चार मौलिक सिद्धान्त थे : (i) संसार दुःखों का घर है। (ii) दुःखों का मूल कारण इच्छाएं हैं। (iii) इच्छाओं का त्याग करने से दुःख दूर हो सकते हैं। इच्छाओं का अन्त अष्टमार्ग पर चल कर ही हो सकता है।

अष्टमार्ग के आठ सिद्धान्त इस प्रकार हैं : (I) सत्य कर्म (ii) सत्य विचार (iii) सत्य विश्वास

(iv) सत्य रहन सहन (v) सत्य वचन (vi) सत्य प्रयत्न (vii) सत्य ध्यान (viii) सत्य समाधि।

(2) **अहिंसा :-** महात्मा बुद्ध ने हिंसा से बचने पर जोर दिया है। उनका कहना था कि सब जीवों से प्रेम करो, किसी को दुःख न पहुंचाओ और न किसी जीव की हत्या करो।

(3) **कर्म सिद्धान्त :-** उनका कहना था कि मनुष्य जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। इसलिए उन्होंने अपने अनुयायियों को सदा अच्छा कर्म करने का उपदेश दिया।

प्र.17 मुगल साम्राज्य के पतन के कोई तीन कारण बताएं। 3

उत्तर : मुगल साम्राज्य के पतन के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे :–

(1) औरंगजेब ने केन्द्रीयकरण की नीति अपनाई जिसके कारण मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया।

(2) औरंगजेव ने गैर–मुसलमानों के प्रति असहनशीलता की नीति अपनाई। इस कारण राजपूत, सिख, मराठे, जाट तथा सतनामी मुगल साम्राज्य के कट्टर दुश्मन बन गये।

(3) औरंगजेव की दक्षिण नीति मुगल साम्राज्य के लिए विनाशकारी सिद्ध हुई। परिणामस्वरूप मुगल कमजोर हो गये और उनका पतन हो गया।

प्र.18 भारत आने वाले विदेशी यात्रियों के प्रमुख उद्देश्य क्या थेः– 3

उत्तर : भारत सदा ही विदेशियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। समय–समय पर अनेक विदेशी भारत आए और यहीं पर बस गये। संक्षेप में भारत आने के लिए उनके उद्देश्य निम्नलिखित थे।

(1) कुछ यात्री भारत की अपार समृद्धि को सुनकर यहां काम की तलाश में आए थे।

(2) कुछ यात्री भारत के साथ व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे।

(3) कुछ यात्री भारत में अपने धर्म का प्रसार करने के उद्देश्य से आए थे।

प्र.19 ब्रिटिश शासनकाल में दस्तकारों की बर्बादी के मुख्य कारण क्या थे? 3

उत्तर : ब्रिटिश शासनकाल ने भारतीय दस्तकारों को बर्बाद कर दिया। संक्षेप में उनकी बर्बादी के कारण निम्नलिखित थे :–

(1) औद्योगिक क्रान्ति के कारण इग्लैंड का माल भारतीय माल की अपेक्षा अधिक सस्ता एवं सुंदर था। अतः लोग भारतीय माल को नहीं खरीदते थे।

(2) अंग्रेजों ने 1813 ई. में भारत के साथ मुक्त व्यापार की नीति अपनाई। इस कारण इंग्लैंड का तैयार माल बिना किसी बाधा के भारत आने लगा।

(3) अंग्रेजों ने रेलों का विकास करके अपने माल को सुदूर गाँवों में पहुँचाया।

प्र.20 जनगणना के कोई तीन लाभ बताएं। 3

उत्तर : जनगणना किसी देश के विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। संक्षेप में जनगणना के लाभ निम्नलिखित हैं :–

(1) जनगणना के आंकड़े शहरीकरण की गति को दिखाते हैं।

(2) इनसे लोगों के शिक्षा स्तर, लिंग, धर्म एवं जाति का पता चलता है।

(3) इनसे लोगों के स्वास्थ्य के बारे में पता चलता है।

(4) इनसे लोगों के जन्म एवं मृत्यु दर का पता चलता है।
(5) इनसे लोगों के व्यवसायों के बारे में पता चलता है।

प्र.21 अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति से क्या अभिप्राय है? 3

उत्तर : 1857 ई. के विद्रोह में हिन्दुओं और मुसलमानों ने अंग्रेजों के विरुद्ध मिलजुल कर उन्हें मुसीबत में डाल दिया था। अतः भारत में ब्रिटिश शासन को मजबूत बनाने के लिए अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई। उन्होंने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक प्रांत को दूसरे प्रांत, एक जाति को दूसरी जाति, हिन्दुओं को मुसलमानों के विरुद्ध, मुसलमानों को हिन्दुओं के विरूद्ध, शिक्षित भारतीयों को अशिक्षित भारतीयों के विरुद्ध, राजाओं को जनता के विरुद्ध भड़का कर 'फूट डालो और शासन करो' की नीति को प्रोत्साहित किया। इस नीति को अपना कर अंग्रेजों ने भारतीय एकता पर चोट की। निसन्देह यह नीति भारत की प्रगति के मार्ग में एक बहुत बड़ी बाधा थी।

प्र.22 कृष्णदेव राय को विजयनगर साम्राज्य का सबसे महान शासक क्यों माना जाता है? 3

उत्तर : विजय नगर साम्राज्य का सबसे महान शासक कृष्णदेव राय था। उसने 1509 ई. से 1529 ई. तक शासन किया। संक्षेप में उसकी मुख्य उपलब्धियों का वर्णन निम्नलिखित है :–

(1) उसने वहमनी, वीजापुर, उड़ीसा एवं गोलकुंडा के शासकों को पराजित कर उनके अनेक प्रदेशों पर अधिकार कर लिया।
(2) उसने विजयनगर साम्राज्य के शासन प्रबंध में अनेक प्रंशसनीय सुधार किए।
(3) उसने साम्राज्य के कृषि और व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक सुधार किए।
(4) उसने अपने साम्राज्य में सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई।

प्र.23 उद्देश्य प्रस्ताव में किन आदर्शों पर जोर दिया गया था? 3

उत्तर : जवाहरलाल नेहरू ने 13 दिसंबर, 1946 को एक उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। इस प्रस्ताव में निम्नलिखित संविधान के मूल आदर्शों की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी :–

(1) भारत एक स्वतंत्र प्रभुसत्ता संपन्न गणतंत्र होगा।
(2) भारतीय नागरिकों को न्याय, समानता तथा स्वतंत्रता का आश्वासन दिया गया।
(3) अल्पसंख्यक वर्गों, पिछड़ी जातियों एवं जनजातियों के हितों की रक्षा की समुचित व्यवस्था की जाएगी।
(4) भारत विश्व शान्ति तथा मानव के कल्याण में अपना पूर्ण योगदान देता रहेगा।

प्र.24 भक्ति आंदोलन की प्रमुख शिक्षाओं का वर्णन कीजिए। 4

उत्तर : (1) **एक ईश्वर में विश्वास :-** भक्ति आंदोलन के सभी प्रचारकों ने एक परमात्मा की भक्ति पर बल दिया। उनके अनुसार राम, कृष्ण, अल्लाह, खुदा इत्यादि एक ही परमात्मा के कई नाम हैं। परमात्मा ही सर्व व्यापक और सर्वशक्तिमान है। वह ही इस संसार की रचना करने वाला, इसका पालनकर्ता और विनाश करने वाला है। ऐसी शक्तियाँ किसी अन्य देवी देवताओं को प्राप्त नहीं हैं।

(2) **मूर्ति पूजा में अविश्वास :-** भक्ति आंदोलन के प्रचारकों ने मूर्ति पूजा के विरुद्ध प्रचार किया। भक्त कबीर जी ने एक दोहे में कहा है कि यदि पत्थर पूजने से परमात्मा मिल सकता है तो वह पर्वत की पूजा करेंगे। गुरू नानक देव जी का कहना था कि मूर्तियों को पूजने से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। जब इन मूर्तियों को पानी में फैंक दिया जाए तो ये डूब जाती हैं। जो मूर्तियाँ अपनी रक्षा नहीं कर सकती, वे मुनष्य को भवसागर से पार कैसे उतार सकती हैं?

(3) **जातिप्रथा में अविश्वास :-** जाति प्रथा हिंदू समाज को एकघुन की भाँति भीतर से खोखला कर रही थी। निम्न जातियों के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया जाता था। उनके ऊपर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए थे। भक्ति आंदोलन के प्रचारकों ने जाति प्रथा का जोरदार शब्दों में खण्डन किया। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में परमात्मा का प्रकाश विद्यमान है। इसलिए सभी मनुष्य समान हैं। मनुष्य को मोक्ष उसके कर्मों के अनुसार मिलेगा, न कि जाति के अनुसार।

(4) **खोखले रीति-रिवाजों में अविश्वास :-** भक्ति आंदोलन के प्रचारकों ने समाज में प्रचलित खोखले रीति–रिवाजों का खंडन किया। वे तीर्थ यात्रा करने, उपवास अथवा रोजे रखने, श्रद्धा भाव के बिना धार्मिक शास्त्रों को पढ़ने, यज्ञ, बलि, संस्कार, शुद्धि, स्नान करने आदि के विरुद्ध थे। उन्होंने गेरूए वस्त्र पहनने, शंख बजाने, शरीर पर राख लगा लेने, कानों में कुंडल डालने, दाढ़ी अथवा मूछें बढ़ा लेने अथवा मुंडवा लेने, कब्रो, मंदिरों और मस्जिदों इत्यादि की पूजा करने को धर्म के विरुद्ध बताया। उन्होंने धर्म के बाह्य आडंवरों के साथ पर मनुष्य की आंतरिक पवित्रता पर बल दिया।

प्र.25 जलियाँवाला बाग हत्याकाँड पर नोट लिखो। 4

उत्तर : जलियाँवाला बाग हत्याकाँड 13 अप्रैल, 1919 ई. को अमृतसर में हुआ। उस दिन बड़ी संख्या में लोग ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित रॉलेट एक्ट के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए जलियाँवाला बाग में एकत्रित हुए थे। जनरल डायर के आदेश पर सैनिकों ने लोगों पर गोलियाँ चला दीं। परिणामस्वरूप सैकड़ों लोग मृत्यु को प्राप्त हुए तथा हजारों अन्य घायल हुए। इस जघन्य हत्याकाँड के कारण भारतीयों से ब्रिटिश शासन का अंत करने का प्रण किया। जलियाँवाला बाग हत्याकाँड के कारण समस्त देश में हाहाकार मच गई। निस्संदेह जलियाँवाला बाग हत्याकाँड भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास के एक मील पत्थर सिद्ध हुआ।

प्र.26 गुप्त काल को प्राचीन भारत का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है? 5

उत्तर : गुप्त काल में वाणिज्य व्यापार, विज्ञान, शिक्षा, साहित्य, भवन निर्माण कला, चित्रकला, मूर्तिकला, सिक्के बनाने की कला, सामाजिक तथा धार्मिक आदि क्षेत्रों में अद्वितीय उन्नति हुई। उस समय लोग समृद्ध थे। राज्य में पूर्ण शाँति थी। इन कारणों से गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।

(1) **राजनीतिक एकता :-** गुप्त साम्राज्य की प्रथम महान् सफलता जिसने उसके शासनकाल को सुनहरी युग कहलाने के योग्य बनाया वह थी गुप्त शासकों द्वारा राष्ट्रीय साम्राज्य की स्थापना।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। इस स्थिति से लाभ उठाकर शक, हूण, कुषाण इत्यादि विदेशी शक्तियों ने भारत के अधिकाँश भागों पर अधिकार कर लिया था। समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त ने भारत में से विदेशी शक्तियों को नष्ट किया तथा एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

(2) **अच्छी शासन व्यवस्था :-** गुप्त राजा महान् शासन प्रबंधक थे। प्रजा का कल्याण करना वह अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। इसी कारण प्रजा राजा की देवताओं की भांति पूजा करती थी। गुप्त राजा बहुत न्याय प्रिय थे। लोगों के ऊपर बहुत कम कर लगाए जाते थे। अपराध बहुत कम होते थे। उनका शासन–प्रबंधन थोड़े–बहुत परिवर्तन के साथ आने वाली कई शताब्दियों तक जारी रहा।

(3) **विज्ञान में उन्नति :-** गुप्तकाल में विज्ञान के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति हुई। आर्यभट्ट गुप्तकाल का सबसे बड़ा वैज्ञानिक था। उसने आर्यभट्टीयम और सूर्य सिद्धांत नामक प्रसिद्ध पुस्तकों की रचना की। इस काल का दूसरा विख्यात वैज्ञानिक वराहमिहिर था। उसने पंच–सिद्धांतिका और वृहत् सहिता नामक विख्यात पुस्तकों की रचना की। गुप्त काल में चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उन्नति हुई।

(4) **साहित्य की उन्नति :-** गुप्तकाल में साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय प्रगति हुई। इस काल में संस्कृत भाषा ने अपने उन्नति के शिखर को छुआ। कालिदास इसी युग का अमूल्य रत्न था। वह संस्कृत का महान कवि तथा नाटककार था। उसने अभिज्ञान शाकुंतलम, मेघदूत, रघुवंश, ऋतुसहार और विक्रमोर्वशीय नामक प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं। विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, विष्णु शर्मा द्वारा लिखित पंचतंत्र की कहानियाँ विश्व भर में प्रसिद्ध हैं।

(5) **वाणिज्य-व्यापार में उन्नति :-** गुप्तकाल में वाणिज्य–व्यापार अपनी उन्नति के शिखर पर पहुँच गया था। गुप्तकाल के प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्रों के नाम पाटलिपुत्र, मथुरा, वैशाली, उज्जैन, कौशांवी और वनारस थे। इन बन्दरगाहों से श्रीलंका, चीन, अरब, ईरान, मिस्र, यूनान, रोम, सीरिया आदि देशों में भारतीय सामान भारी मात्रा में भेजा जाता था। भारत मुख्य रूप से सूती तथा रेशमी कपड़ा, औषधियाँ, गर्म मसाले, नील, नारियल और हाथी दाँत से निर्मित वस्तुओं का निर्यात करता था।

अथवा

प्र. गुप्त साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे? 5

उत्तर : समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने अथक प्रयासों से एक गौरवपूर्ण साम्राज्य की स्थापना की थी। उनके शासनकाल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। इस महान साम्राज्य का पतन पांचवी शताब्दी में आरंभ हो गया था तथा छठी शताब्दी में इस का अन्त हो गया। गुप्त साम्राज्य के पतन के लिए कई कारण उत्तरदायी थे। इन कारणों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है–

(1) **दुर्बल उत्तराधिकारी :-** गुप्त साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण स्कंदगुप्त के दुर्बल उत्तराधिकारी थे। ये सभी शासक बहुत अयोग्य प्रमाणित हुए। वे शासन प्रबंध की ओर ध्यान देने की अपेक्षा ऐश्वर्य में डूबे रहते थे। वे न तो विदेशी आक्रमण रोक सके और न ही भीतरी विद्रोहों का दमन कर

सके। परिणामस्वरूप गुप्त साम्राज्य की स्थिति दिन–प्रतिदिन बिगड़ती चली गई और वह रेत के महल की भाँति नष्ट हो गया।

(2) **उत्तराधिकार के संबंध में नियमों का न होना :-** गुप्त काल में उत्तराधिकार के संबंध में कोई लिखित नियम नहीं थे। इसलिए सिंहासन प्राप्ति के लिए प्रायः राजा की मृत्यु के पश्चात परस्पर लडाईयाँ आरंभ हो जाती थी। ये लड़ाईयाँ गुप्त साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुईं।

(3) **विशाल साम्राज्य :-** समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय जैसे गुप्त शासकों ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। यह साम्राज्य इतना विशाल था कि इसे नियंत्रण में रखना बहुत कठिन था। इसका कारण यह था कि उस समय यातायात के साधन बहुत कम थे। इस कारण गुप्त साम्राज्य का पतन अवश्यभावी हो गया था।

(4) **आर्थिक संकट :-** आरंभ में गुप्त साम्राज्य बहुत समृद्ध था। गुप्त शासकों ने कला तथा साहित्य के लिए काफी धन व्यय किया। गुप्त साम्राज्य के विस्तार के लिए भी सेना पर बहुत धन व्यय किया गया। बाद में हूण आक्रमणों के कारण गुप्त साम्राज्य में अराजकता फैल गई और आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। ऐसी स्थिति में गुप्त साम्राज्य के पतन को रोका नहीं जा सकता था।

(5) **हूणों के आक्रमण :-** हूण एशिया की एक बहुत ही अत्याचारी जाति थी। उनके नेताओं तोरमाण तथा मिहिरकुल ने गुप्त साम्राज्य पर बार–बार आक्रमण कर के उसके पतन का डंका बजा दिया था। हूण सैनिक घुड़सवारी तथा तीर चलाने की कला में गुप्त सैनिकों से आगे थे। इस कारण गुप्त सैनिक उनका सामना न कर सके। हूणों के वे आक्रमण गुप्त साम्राज्य के लिए बहुत विनाशकारी प्रमाणित हुए।

प्र.27 1857 ई. के विद्रोह के राजनीतिक कारणों का वर्णन करें। 5

उत्तर : 29 मार्च 1857 ई. को बंगाल के वैरकपुर में एक ऐसा विद्रोह शुरू हुआ जो जल्दी ही सारे भारत में फैल गया। संक्षेप में इस विद्रोह के राजनीतिक कारणों का वर्णन निम्नलिखित हैः–

(1) **अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति :-**

अंग्रेजों द्वारा भारत में अपनाई गयी साम्राज्यवादी नीति 1857 ई. के विद्रोह का कारण बनी। वैसे तो लगभग सभी गवर्नर–जनरलों ने अंग्रेजी साम्राज्य को मजबूत करने के लिए भारतीय राज्यों को जीतकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाया, लेकिन लार्ड डल्हौजी ने इस संबंध में सभी सीमाओं को पार कर दिया। उसने लैप्स की नीति अपना कर सतारा, संभलपुर, उदयपुर, झांसी, जैतपुर और नागपुर आदि रियासतों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाया। उसने अनेक उपाधियों व पैंशनों को बंद करके अंग्रेजी साम्राज्यवादी मानसिकता को बढ़ाया।

(2) **मुगल बादशाह बहादुर शाह का अपमान :-**

अंग्रेज आरंभ में मुगल बादशाहों का बड़ा सम्मान करते थे लेकिन अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद उन्होंने मुगल बादशाहों का अपमान करना शुरू किया। 1837 ई. में जब मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर सम्राट बने तो अंगेजों ने उन्हें नजरअंदाज किया। अंग्रेजों ने यह घोषणा कर दी कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी सारी सम्पत्ति पर वे कब्जा कर लेंगे। यह भी घोषणा की कि उनके उत्तराधिकारियों को लाल किला छोड़ना पड़ेगा।

(3) **नाना साहिब की पैंशन बंद करना :-**

अंग्रेजों ने नाना साहिब की पैंशन बंद करके आग में घी का काम किया। अंग्रेजों ने नाना साहिब को पेशवा का उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया। उनकी वार्षिक पैंशन भी बन्द कर दी। परिणामस्वरूप नाना साहिब अंग्रेजों का कट्टर शत्रु बन गया और अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष करने का निर्णय लिया।

(4) **झांसी का विलय :-**

1853 ई. में झांसी के महाराजा गंगाधर राव की निःसंतान मृत्यु हो गयी। लार्ड डल्हौजी ने उनके गोद लिए पुत्र को उनका उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया। उसने लैप्स के सिद्धान्त के अनुसार झांसी राज्य को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। लार्ड डल्हौजी की इस अन्यायपूर्ण कार्यवाही से न केवल झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बल्कि वहां के लोगों ने अंग्रेजों को सबक सिखाने के लिए 1857 ई. के विद्रोह में भाग लिया।

(5) **अवध का विलय :-**

1856 ई. में डल्हौजी ने अवध राज्य को कुप्रबंध के आधार पर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। अवध के नवाब आरंभ से ही अंग्रेजों के सदा वफादार बने रहे। इस कार्यवाही के कारण अवध के लोग भड़क उठे तथा उन्होंने अंग्रेजों से बदला लेने का संकल्प किया। इस कार्यवाही से अन्य देशी राज्य भी अंग्रेजों के प्रति आशंकित हो गये।

अथवा

प्र. 1857 ई. के विद्रोह की असफलताओं के कारणों का वर्णन करो। 5

उत्तर : 1857 ई. का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। कई स्थानों पर भारतीयों ने अंग्रेजों से अपने खोये हुए राज्यों को पुनः प्राप्त कर लिया। लेकिन अन्त में अंग्रेज भारतीयों को हराने में कामयाब हुए। संक्षेप में विद्रोह की असफलता के कारण निम्नलिखित थे :–

(1) **विद्रोह निश्चित समय से पूर्व शुरू हो गया :-**

नाना साहिब तथा अन्य नेताओं ने देश भर में विद्रोह के लिए 31 मई 1857 ई. का दिन निश्चित किया था लेकिन विद्रोह सैनिक कारणों से 29 मार्च, 1857 को पहले ही शुरू हो गया। समय से पहले शुरू होने के कारण भारतीय अपनी तैयारियों को पूरा नहीं कर सके। अतः अंग्रेजों को विद्रोह को दबाना आसान हो गया।

(2) **विद्रोह सारे भारत में न फैल सका :-**

वैरकपुर में घटी घटना के बाद यह विद्रोह धीरे–धीरे अन्य भागों में फैल गया। यह विद्रोह उत्तरी भारत के कुछ भागों तक ही सीमित रहा। पंजाब, राजस्थान, बिहार, बंगाल एवं दक्षिणी राज्यों ने इस विद्रोह में भाग नहीं लिया। अतः इसे दबाना अंग्रेजों के लिए आसान हो गया।

(3) **संयुक्त उद्देश्य की कमी :-**

विद्रोहियों में एक सबसे बड़ी कमी यह थी कि उनका कोई संयुक्त उद्देश्य नहीं था। देशी शासक अपने खोए हुए राज्यों को प्राप्त करने के लिए लड़ रहे थे। मुसलमान मुगल साम्राजय को पुनः स्थापित करने के लिए लड़ रहे थे। अतः संयुक्त उद्देश्य की कमी के कारण भारतीयों को असफलता का मुँह देखना पड़ा।

(4) **साधनों का अभाव :-**

विद्रोहियों के पास आवश्यक साधनों का अभाव था। उनके पास अच्छे अस्त्र–शस्त्र नहीं थे। भारतीयों के पास केवल तलवारें थी अतः वे बन्दूकों व तोपों का सामना नहीं कर सके।

(5) **भारतीय राजाओं का अंग्रेजों को सहयोग :-**

भारत के अधिकांश राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया। हैदराबाद, ग्वालियर, पटियाला, नाभा, भोपाल आदि भारतीय शासकों के सहयोग से अंग्रेजों ने विद्रोह को आसानी से कुचल दिया। लार्ड कैनिंग ने ठीक ही कहा है, ''ये शासक तूफान को रोकने में बांध की तरह सिद्ध हुए।''

प्र.28 भारत के रेखा मानचित्र पर हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख केन्द्रों को दर्शाइए। 5

उत्तर : हड़प्पा सभ्यता के मुख्य केन्द्र।

A–832–A A–832–A–XII–2316

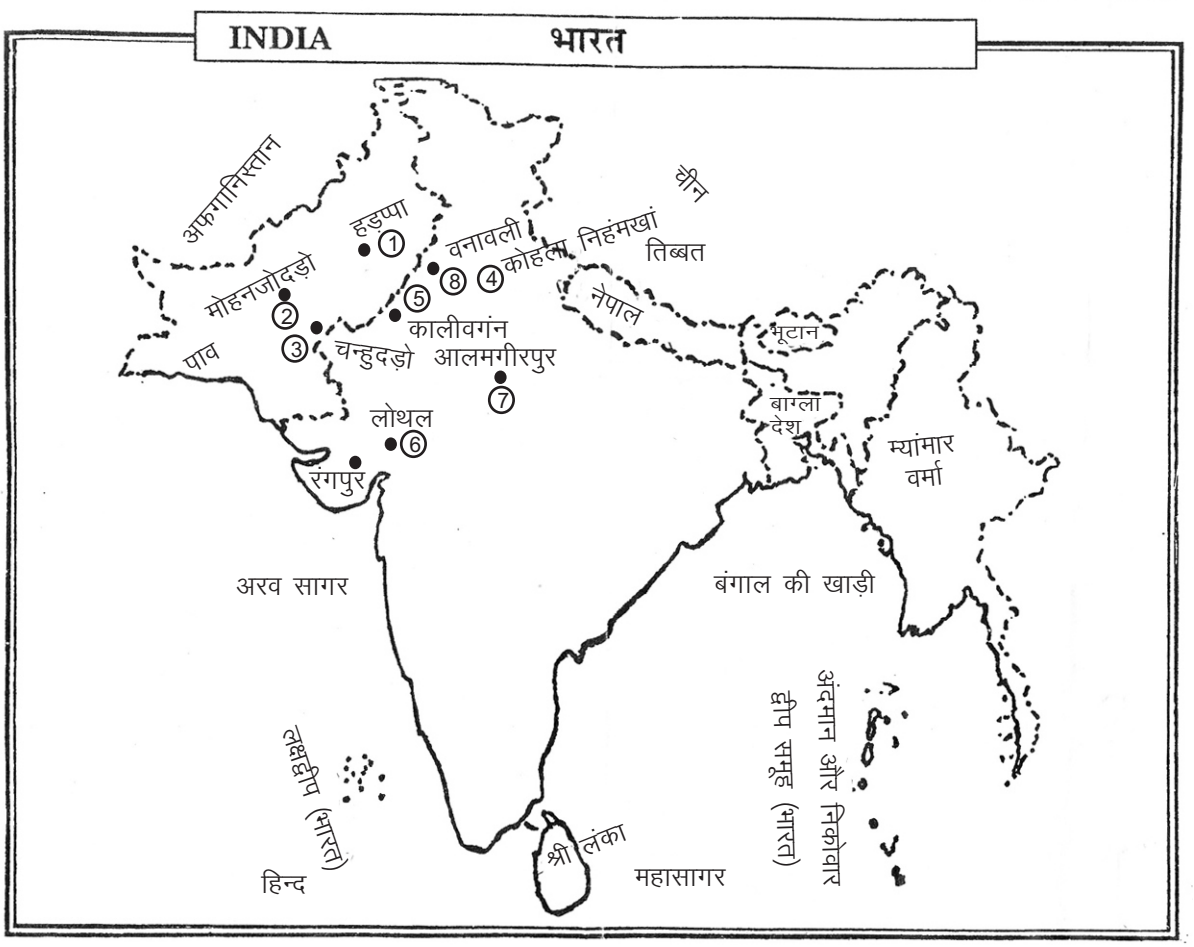

अथवा

प्र.28 भारत के रेखा मानचित्र पर 1857 ई. के विद्रोह के प्रमुख केन्द्रों को दर्शाइए। 5

उत्तर : 1857 के विद्रोह के प्रमुख केन्द्र।

अथवा

1857 ई. के विद्रोह के प्रमुख केंद्र।

उत्तर :